

जानक

ग्रन्थ

आभा नर कोचि
2498

वाजिपति वाकुलभवन

दंति नी (कोना) का कलानी या
नमः विष्णवे स्यात् महा उ (आ) यथा
वृक्ष (आ) यथा स कय निम प निवृद्धा ॥ १८ ॥ (ग) न पुत्र खन ग (आ) विष्णवे स्यात् ययत् धन मिमा या स द रु
११ विमान का टि उ या रा तु निवृद्धा उन वा यि उ ॥ ॥ धन धनि स या (ग) विष्णवे स्यात् ययत् धन मिमा या स द रु
वहा न पू र्ण क ल उ सा द र व न् ॥ ॥ धन स ह य या य स (ग) विष्णवे स्यात् ययत् धन मिमा या स द रु
स्थ न स त्र का ग उ न म ल ॥ ॥ न ग र्ण स ह य या य स (ग) विष्णवे स्यात् ययत् धन मिमा या स द रु
॥ १९ ॥ (ग) न स ह य या य स (ग) विष्णवे स्यात् ययत् धन मिमा या स द रु

॥ १९ ॥ (ग) न स ह य या य स (ग) विष्णवे स्यात् ययत् धन मिमा या स द रु
॥ २० ॥ (ग) न स ह य या य स (ग) विष्णवे स्यात् ययत् धन मिमा या स द रु
॥ २१ ॥ (ग) न स ह य या य स (ग) विष्णवे स्यात् ययत् धन मिमा या स द रु
॥ २२ ॥ (ग) न स ह य या य स (ग) विष्णवे स्यात् ययत् धन मिमा या स द रु
॥ २३ ॥ (ग) न स ह य या य स (ग) विष्णवे स्यात् ययत् धन मिमा या स द रु
॥ २४ ॥ (ग) न स ह य या य स (ग) विष्णवे स्यात् ययत् धन मिमा या स द रु
॥ २५ ॥ (ग) न स ह य या य स (ग) विष्णवे स्यात् ययत् धन मिमा या स द रु
॥ २६ ॥ (ग) न स ह य या य स (ग) विष्णवे स्यात् ययत् धन मिमा या स द रु
॥ २७ ॥ (ग) न स ह य या य स (ग) विष्णवे स्यात् ययत् धन मिमा या स द रु
॥ २८ ॥ (ग) न स ह य या य स (ग) विष्णवे स्यात् ययत् धन मिमा या स द रु
॥ २९ ॥ (ग) न स ह य या य स (ग) विष्णवे स्यात् ययत् धन मिमा या स द रु
॥ ३० ॥ (ग) न स ह य या य स (ग) विष्णवे स्यात् ययत् धन मिमा या स द रु

चर्मलिदगावर्मालिगाउयम्। सीयाफकाउयवर्ष, पूरुमिणीसमावनम् ॥ २१ ॥ एभनसुपुत्रवमाकायद
मसुचुदनसुय, किउगागाउलयजिमसुचुदनकाडा, वदुआमिउगालयवदुलय ॥ ॥ लालनादहवा
कादनादहवागुला ॥ ४ ॥ नमोऽगिषिचपुण्यनाउयननुलालयम् ॥ २१ ॥ कायमाकाथउ। सुखननया
नकदापुडा, नाउलयमयांन, अनमगुलरुडा, थननकायगिषापनिगाउलयमाल, लाललययकम
मउ ॥ ॥ नूचित्रस्यासयास्यागी, सहायाकिपयाऊन। गावूलेयदिनस्यागा, पुहायाकिपयाऊनी ॥ २२ ॥
एभनसुपुत्रवनविद्यामनस, अग्नि, नूचिउ। अस्यासडा, थूयाडा, हायकीरुली, पुहायनसुपयाऊन, नूचिनी
अस्यासनी, मदमडा, उहायनसुपयाऊन ॥ ॥ पूजामुविदिमि ॥ ॥ नूचिआ, अगमनी, वूधेश, निदिह

[illegible]

या आरुत्र हा कुली गुहा गुहा या आरुत्र हा कुली हान हान या आरुत्र हा कुली कमा ॥ ॥ गुही पृष्ठ सिमा नृपी ॥
 ले पृष्ठ सिमा कुली सिद्धि पृष्ठ सिमा विद्या शर्मा पृष्ठ सिमा धर्मी ॥ २८ ॥ नृपमखन लय गुहा लङ्गन कुल मखन
 लय गीत मं वैलङ्गन विद्या मखन लय सिद्धि लङ्गन धन मखन लय दक्ष कुल लङ्गन ॥ ॥ अङ्गुल स्यादहर्निश
 अङ्गुल स्यादहर्निश ॥ अस्मिद्धि पृष्ठ हान विद्या अङ्गुल स्यादहर्निश धर्मी ॥ २९ ॥ गुहामदगदङ्गा नृपखल कुलीः
 गीत मखन हाङ्गा कुल पहाल कुली अस्मिद्धि कुल हाङ्गा विद्या पहाल कुली दक्ष कुल मदगदङ्गा धन खल
 लङ्गन ॥ ॥ गुही पृष्ठ नृपी गीत स्यादहर्निश सिद्धि स्यादहर्निश विद्या शर्मा स्यादहर्निश धर्मी ॥ ३० ॥ नृ
 पमखन हा कुली गुहा गुहा या आरुत्र हा कुली गीत विद्या या आरुत्र हा कुली सिद्धि धन या आरुत्र हा कुली

७

२३ लं २३ लं २ मित्रा जल पङ्कली ॥
 १ लंदर उक्त ॥ ॥ सुकुल या जल न्याय विद्या स्यादहर्निश ॥ अस्मिद्धि पृष्ठ हान विद्या अङ्गुल स्यादहर्निश धर्मी ॥ ३१ ॥
 ॥ कं न्या या जल पङ्कली सिद्धि कुल स्यादहर्निश विद्या अङ्गुल स्यादहर्निश धर्मी ॥ ॥ नासुद्धि मि
 मत्रा मद्रु नासि निम्रन सागरी ॥ अस्मिद्धि पृष्ठ हान विद्या अङ्गुल स्यादहर्निश धर्मी ॥ ३२ ॥ उपाय या मद्रु नासि
 न नाजुता मद्रु नासि काहा उपाय मद्रु नासि सागरी स्यादहर्निश धर्मी ॥ ३३ ॥ अस्मिद्धि पृष्ठ हान विद्या अङ्गुल स्यादहर्निश धर्मी
 य अर्थन अस्मिद्धि पृष्ठ हान विद्या अङ्गुल स्यादहर्निश धर्मी ॥ ३४ ॥ अस्मिद्धि पृष्ठ हान विद्या अङ्गुल स्यादहर्निश धर्मी
 न कर्म ॥ ३५ ॥ अस्मिद्धि पृष्ठ हान विद्या अङ्गुल स्यादहर्निश धर्मी ॥ ३६ ॥ अस्मिद्धि पृष्ठ हान विद्या अङ्गुल स्यादहर्निश धर्मी
 न कर्म ॥ ३७ ॥ अस्मिद्धि पृष्ठ हान विद्या अङ्गुल स्यादहर्निश धर्मी ॥ ३८ ॥ अस्मिद्धि पृष्ठ हान विद्या अङ्गुल स्यादहर्निश धर्मी

बुद्धिः। विविधलिङ्गाः। अङ्गद्वयेन नयापि यदमर्कं न गच्छति ॥ ३४ ॥ अस्मद्वृत्त्यान्तसासपादिनिर्देशात्
 जाऊनउनी ॥ पनागमद्वयानसासपादिनीर्गदलिङ्गकउद्यागार्थन ॥ ॥ गनेत्रधर्मगनेविद्यागने
 पर्वनमात्रहा। गनेधर्मव्यकामग्ययायामव्यगनेहाने ॥ ३५ ॥ धनसहाययायसविद्यासन्नस्यपर्वनजाय
 सधर्मयायस ॥ ॥ कागायसधनसवृत्तुनउनीजिमिउ ॥ ॥ गुनसहाययायविद्यासन्नधननवाअर्थ
 कागिहयायाविद्यासन्नधननवाअर्थ ॥ ३६ ॥ विद्यालायलधयातानुदउ। गुनयासहायगीर्थपूवधनध
 ननदिवाविद्याहिलान ॥ ॥ उकादत्रयदानार्थयागुनसहायिमन्यगदधनयानिसर्गगत्या। यधुलस्यपिउ
 ॥ ३७ ॥ अङ्कनद्वयमात्रसहाययायविद्यासन्नधननवाअर्थ ॥ ॥ विद्यालायलधयातानुदउ। गुनयासहायगीर्थपूवधनध
 ननदिवाविद्याहिलान ॥ ॥ उकादत्रयदानार्थयागुनसहायिमन्यगदधनयानिसर्गगत्या। यधुलस्यपिउ

लयाकऊयलपीउ ॥ ॥ प्रकयययाधार्मनाधार्मगुनसनिधि। नरागसहायसहायमक्षजालगद्वृत्त
 मय ॥ ३८ ॥ गुनयाकमस्यपुठिसस्यसहायविद्यागार्थधयालसा। जालयालनदउ। भावाधर्मसहाय
 सहायलाक ॥ ॥ जिलियोलमनारसीयधियमिगसैगद्वृत्तुनउनीविद्यापीधेनअङ्कया
 निधि ॥ ३९ ॥ सिकर्मियायापालत्यहकर्मियायापालअलासमगउ। साधूऊनउ। मिगयायगामसुस
 यकधदानाखनीरूसीनीयेमहअङ्कनयारधुलधय ॥ ॥ नहिऊननिऊनस्ययस्यगुनउअ
 न। गुनसहायगीर्थपूवधनध ॥ ४० ॥ अङ्कनउअधयमइ। अङ्कनलीगुनवक्तुअधु
 हायविद्यायाहाउ। इधलिसधलपमानध ॥ ॥ किङ्कलनविलनगुनवीरुजिमाननधनवर्धनविगुः

द्वापि। निरु। दार्किं कनिशानि ॥ ४१ ॥ इतिरिच्य दूषयाजनम्यकृद्गानगुलधुलजाकृलोकनमान्ययाशूधनूदिस
 राजायाकायच्छिथइलानिर्गुनिशुवहाउादूषयाजन ॥ किंइलनविशमत्रनविशाहिनसुथानव४। अकृतिनाः
 विविहांसादेवनेवापिपूकृक ॥ ४२ ॥ गनधूमनूषयाकूलवक्रुयानदूषयाजनविशाहीनयाहाउाधम
 सुसकलेपूकृतिशुलसर्नगाथदयपूजलयाध्विपूजायाय ॥ नालार्थिचरवविशाजावस्थानंनगक
 नि। ४३ ॥ विशाकृलीनामउाध्विसमूदपालयायसंसधुनाल
 ॥ मनलागतपिउ। ४४ ॥ दपालधूनहाउ। नामनदूषयाजन ॥ गुल४४ सर्ववदकृकपिलवै। ४५ ॥ नि
 नर्थक। वासुदवनम। ४६ ॥ वसुदवेनगजना४॥ ४७ ॥ विरुवनेसैयुलिकपूजायामेगुनमधुलहाउाना



नायवसवदूवसुदवलीकृकसर्नपूजामयाक ॥ गुल४८ कृवकिउनलीइनपिवसगीसगी। कन
 किमधमाद्याय। स्वयीगाकृनिषत्यदा४॥ ४९ ॥ गुल४९ वक्रुवसलयाध्वसाधूजनवेंसंवाहथा
 सनायिनवानसर्नगाथकटकिह्यानयाननगमत्ररुगजानअध्वलाकंउानी ॥ विशात्य
 वनृषलीचनहिगुल्यपनाक्रम४। स्वदगापूजीनात्राजाविशासर्वमपूजयन् ॥ ५० ॥ नाजाउ
 विशासउाकृउागुल्यमरुउा। नाजाकृलीथउागाययाशूकानमान्ययायविशासउाकृकृलीः
 सानउानीसर्नगाकंयजानीमययायूउा ॥ एकनापिसुपूगहाविशाकृकीनसाधुनीकृल
 पूवसिहिनचत्यनेवषकामयक ॥ ५१ ॥ सुपूगविशावक्रुसाधूयाकृलरिसपूवसिह

अथ लसत्यागीशुआदु ४ वसुधैव कुटुम्बकम् अथ धिं वै कृता जायाय ॥ ॥ कूलशीलवु (धायन
४ सत्यधर्मपरायण ४ पुविन ४ पञ्चादक्षरा जाध्वदा रिधायन ॥ ५४ ॥ कूलवक्तृशीलवक्तृ
नवक्तृधर्मीकयुनविदक्ष हाक्षमावक्तृदयावक्तृ थधिदक्षरा जायाय ॥ ॥ कुलैव सनिनीलईशू
युगईसदाऊपै। ऊनायव्यत्कर्त्तृना धियस्यै निष्ठा जयन् ॥ ५५ ॥ काधिव्यसनिकामसत्रमशुआ
ला रि कूनीमशुआ, कार्कवयमस्यस्यै वैत्रियाक थधिं कृता जायायामनउ ॥ ॥ मूलवृहहिनाः
धीनः सर्वत्र त्रयनिदक ४ शुचिधयव्यवशा यीव धर्मा ध्वदा विधियन ॥ ५६ ॥ कुकार्यकूल
अकार्यसहिनशुआ, धीनवक्तृसमस्तत्रयावनीदा रिउ, शीलवक्तृ, व्यवसाययो कक्ष धर्मि

[illegible]

॥ ३० ॥ कार्ययान्नूपमसुतावलवनलककुशुमादी
 मरुताविचक्रवथकयमिहालक्षय ॥ ॥ समरुहगणभक्तु ॥ ३१ ॥ मरुताविचक्रनयचक्र
 मोर्यगु (६५) पन (६५) मनाधका विधीयन ॥ ३२ ॥ मरुताविचक्रनयचक्र
 मरुताविचक्रनयचक्र ॥ ३३ ॥ मरुताविचक्रनयचक्र
 मरुताविचक्रनयचक्र ॥ ३४ ॥ मरुताविचक्रनयचक्र
 मरुताविचक्रनयचक्र ॥ ३५ ॥ मरुताविचक्रनयचक्र

॥ ३६ ॥ मरुताविचक्रनयचक्र
 मरुताविचक्रनयचक्र ॥ ३७ ॥ मरुताविचक्रनयचक्र
 मरुताविचक्रनयचक्र ॥ ३८ ॥ मरुताविचक्रनयचक्र
 मरुताविचक्रनयचक्र ॥ ३९ ॥ मरुताविचक्रनयचक्र
 मरुताविचक्रनयचक्र ॥ ४० ॥ मरुताविचक्रनयचक्र

४ यस्मिन् निवासाय हस्तलेखधनाशमः ॥ ७५ ॥ हानीनया जलपाकार्यसनाजासत्यस्वगुहादयः
 जसकीलियत्र सस्वर्गसपाफिरुलक्षीवृद्धिरुयु ॥ ॥ मूर्खानि योऽमाने उच्यते योऽपि महीपतयः
 यः ॥ ७६ ॥ मूर्खतया जलपाकार्यसनाजासत्यस्वगुहादयः
 ७७ ॥ ॥ मूर्खजसलक्ष्मीमायुष्यत्र सनत्रकजानी ॥ ॥ तस्माद्भूमिष्वपि निखीधर्मो कामार्थवृद्धयः ॥ गुहा
 वक्रनियोक्ता गुहाहीनविवर्जय ॥ ७८ ॥ धननभनष्टराजानधर्मज्जर्थकामवृद्धियायनगुहा
 वक्रनयो जलमालज्जगुहागुहाहीनक्रमाजनेमाल ॥ ॥ यत्किंचित्कुरुते नृणां गुहं वा यदिः
 कागुहं भनसमृद्धिगनाजासकनेद्रुनेत्रपि ॥ ७९ ॥ गुहावक्रनयो जलपानधननगुहाया

दनैः सुकृतया दनैः ४८ कृतया दनैः राजासकृद्विद्या ॥ ॥ यथाहमपि त्रिदशनापदाउतकृदने
 नथाहमपि मयवकुललीनकर्मसम ॥ ८० ॥ गार्थलया धर्मज्जयदायनाकधनलयापत्रिदशनाहार्थ
 ज्जार्थसारावकर्मनेपूत्रययापत्रिदशनाय ॥ ॥ हानकीपुत्राहृष्ट्यावाधवायसनागीम ॥ ज्ज
 कलनगधमिर्गार्थाचविरुवदय ॥ ८१ ॥ उर्ध्ववनहिनस्वयक्राकासीसर्जनहीनस्वयज्जपदास
 मिर्गहिनस्वयविपरिससुहिनस्वय ॥ ॥ हृष्ट्यावद्रुविधनाजान्द्रुमाधममधमा ४८ नियोक्ताज
 धाजावधमिर्गविधवकर्मस ॥ ८२ ॥ उर्ध्ववनज्जनेगविधि ४८ हिप्पमर्हिग्वमधमधमनैधधाध
 उधसयावधजलप ॥ ॥ ज्जालस्यमूखलीकलीनदवांसुनी ४८ ॥ ४८ ॥ मर्गकचयज्जहृष्ट्यनन

धिय॥ १४॥ अलक्ष्मीनाय उतामधी वसनी हन्त्री विकानसुनु ह मरुता थधिक्वउक्ता यनभा उत माल॥ ॥
त्यक्तवामिनमत्युर्ध्वं अत्युर्ध्वं कृपनं रज्जुना। कृपनादिवि (१५) मरुतं नस्माच कृपनासनं॥ १५॥ अग्निउग
स्वामिना उत माल उग मरुत सनं कृपनी रेलठा उा कार्ययादा र्तिव्यमर्ति र्व्यममिलठा उा थराजा
तम माल थराजा या कार्य नाभं कृप॥ ॥ वामरुर्ध्वं सुभा मूर्ध्वं पृथका वाग्धियात्र के। निमहावन्धू
वर्जयत्युदस्य महत्सुखं॥ १६॥ धियमिस्मया कस्ती थरुल मूर्ध्वया काय थरुल छाया गु ठिम
या कस्ती मिसा थरुल स्त्रह मइ सर्जन थरुल थरुल उतान महा सुखदय॥ ॥ नकस्ति कस्य चित्ति
न कस्ति कस्य चित्ति य ४ काल एव जाय क मिजानी भाप वरु थ॥ १७॥ मिगदय उा सर्जन दय

7

उा कान्तानमिगु उा सर्जन उा भग्नु उा कान्त दन ठा उा॥ ॥ कार्य थिर उत लाक ४ न लाक पत्र मार्थ न ४
वस ४ दीन दय द द्वाय निरु उा मिमात्रं॥ १८॥ कार्य या अकार्य या अन्तः सान लोक उा र्जुल थ माल ठाः
(१९) धर्तु धाल सा सा चान इ इ त्वन मद या उा मा शा ना उत ले॥ ॥ इग वस निना तिडा अरु प स्य कृ ना त्र मि
कृ न ४ सो ष्य द त्रिद स्य इ र्जन स्य कृ न ४ क मा॥ १९॥ य स नि स न र्जु उा क्क या क्क उ न म इ र्जु कि म र्जु ठा क्कीः
न मि म इ द त्रिद या सुख म इ र्जन या क क मा म इ ४॥ ॥ गस्त्र स्य कृ ना मा म्मा इ र्जन स्य कृ न ४ क माः
व स्या म्मा इ र्जन ४ स्त्रहा कृ न स्य च क मिना॥ २०॥ त्रया क मा न्य म इ र्जन या क क मा म इ व स्या या क
स्त्रह म इ र्जु मि निया क स्य म इ॥ ॥ इ र्जु ल स्य वला रा जा वाला नी र्दु दि नी वली वली मूर्ध्व स्य मी न ले ची

[illegible][illegible]

दासस्नानहृदासलाः मातृसधनत्रयं गली ॥ किंकनिष्पत्तिर्सेयर्क ४ सखावाइत्रिकुम। पस्यामृरुले
 मध्वरुकायातां मुतागत ॥ ५३ ॥ नापचादानरुका द्यायसखावगुलिहः हलमरुः अमउतायवा
 दानमृमृरुकाः पाउखादरुयमरु धं सखावहलमरु ॥ ॥ गार्कनावसवल्धनमध्वनिम्वयः
 तिहिगठ। मध्वकीनसमावृहिनिम्वकिंमध्वनायन ॥ ५४ ॥ साखनहाखनगिनिविहाउदधुसुनिम्वमा
 पियधयागसलिसाखनहावियः कहिउइइउहृहियधधिनेनिम्ववाइयुला ॥ ॥ पूरुकेयूवः
 जाविद्यापनहसुयधनेकार्यकालचसैपाफनसाविध्यानमदुर्न ॥ ५५ ॥ पूथिससास्यमसाविद्या
 मवयाहसुखाइधनकार्यपुजायायसध्वविद्यानविद्यामध्वधननधनमध्व ॥ ॥ इत्रस्तिनानिमिः

२२

कन २

यानीनिहृहानियवाइवा ४ किंयथाजनकरुवीमथिनानिसुलानिष ॥ ५६ ॥ इत्रसचाहमियसहः
 मइवाइवकुयथाजनयायवलसेमइधानिसुल ॥ ॥ अगवाइमयूषाहीइत्र। स्तानिववाइवा ४ का
 रुजालखलेनयथ ४ कालनायनिहिनि ॥ ५७ ॥ वनसचाहमिमायास्नानइत्रसचाहमियवाइवतनः
 लसमइ। चासुनयाध्व ॥ ॥ पाइवावचनहीनस्यकर्महीनस्ययानन ४। नित्रध्वचननागस्यलध्वः
 यीचुमयाय ॥ ५८ ॥ यइवाइवचनक्रामसउयाक्रानीनर्थवृद्धिरुलीगाथनलिसधललुडाध्व
 ॥ ॥ इत्र। यइवाइवचनक्रामसउयाक्रानीनर्थवृद्धिरुलीगाथनलिसधललुडाध्व
 चालसत्वाडाउमडि। कसध्वइमुपूयकेजादसुथसुजास्यउउधयनानिसुलरुली ॥ ॥ नि
 सुलाकपनासुवानिसुननिनाउल। धावहीरुका। लसध्वनिविनिषुला ॥ ५९ ॥ रुयनियाक

॥ ५९ ॥ १

॥ ५९ ॥ १

सुवायादात्रागियाक इमीयाक गालवाक वायाक दुहायदार्धधननिष्कलशर्ल ॥ वनयकुलजी
 साहाविनुपामपिकयकात्रयसिनिननीजीपुनेवाकसदृसंदल ॥ ५१ ॥ साहीकनसुकलजायलपुकन्यावित्र
 पिरुलसनेविवाहानयायूअत्रुपिनिरुलसनेनीचमनअउथ ॥ ५२ ॥ ददमालविवाहानयाययाग्य ॥ विषाद
 यमृनेय ॥ अमममदपिकिअने ॥ निवादयूरुमाविआलीनतद्रुललादपि ॥ ५३ ॥ विषसचानसने
 अमृनरुलहाअकाययाअअयविगथयसनचानसनेलकाययाअनीचयाकचानसनाउरुमविः
 आरुलहाअकायमालअरुलिरुलसनेलीनतकायमाल ॥ कस्यदार्धकलनासिवाधिनाकानपीः
 धुतठकननेवासनेवाकीथियकस्यनिननन ॥ ५४ ॥ स्याकलसदायमइसुवाधिनमपिउलपुसना
 नइ ॥ समसिआसम्यविउंस्यानिननमइअ ॥ ५५ ॥ दायायसिगुलवायसिनिगुलवायपिजायनसुइ

२३

लस्ययस्यनालारवमिकर्कअ ॥ ५६ ॥ दायरुलसीगुलरुलसनेमइअमइअथखैकालसाकामलयअयानात्रस
 कर्कअन ॥ ५७ ॥ अमृनेमिनित्रवैकिअमृनेदीनराजनेअमृनेगुलवमिरायोअमृनेवालराधिः
 म ॥ ५८ ॥ मिनित्रकालसमअमृनइइमाअअमृनगुलवमिमिरीरुलहासीअमृनवालखनकायावचन
 रुलहासीअमृन ॥ इलेरापाकनीवानीइलरमुदमिपुअइलेरावसहलानीइलरववनेपिय
 ॥ ५९ ॥ इलररुलीपाकगिवचनकमावकसामिइलरसहमिमीइलरलाकअअयकखकायइल
 र ॥ ॥ नदिनीजाकविअअनानीनाअयमिवगा ॥ ६० ॥ मत्रयाअनृयाय्माइइअनीअनृनिवृति ॥ ६१ ॥
 नदिदकासर्गीमअमिसादकसयमिवगाअमृमत्रयादकासनाजाअमृदकादकासअमथयसयायस

जानउधायल्ल॥ ॥ पूर्योपसमाकीर्णदाणादाससमाकृती। रार्थाविरहितः पूर्योपसमाकृती। ॥
 ॥ ७८ ॥ कायचयसामिसादतसर्नसीमदतडा। पूर्ययाग। ॥ ७९ ॥ सुखं कृयाल्ल्याव॥ ॥ सर्वेषामेव
 तानसीयात्रतमनरुमी। रुत्माहृदर्थनीचयानाव्यत्यकाधनन। कि॥ ॥ ८० ॥ समस्तनलेदकसुमीत्रतउरुम
 धनयाकतानधमदतडा। धननतकृयाय॥ ॥ ८१ ॥ सुमीहकिरुद्वानिकुपूहंयनकृलीकमकीहेयन
 नाजा। नाहुवीनहाहंयन॥ ॥ ८२ ॥ कृवेनेनमिसानकुरुंममाचकलीकपूणकलमाचकलीकमकीनना
 जा। माचकलीखनना। माचकली॥ ॥ ८३ ॥ दावसहसा। एषासी। महीयन। गृहाचारसुगात्यमिम
 न। लयनीनासह॥ ॥ ८४ ॥ मिसायादावनदाल्लि १००० गुनदनीखना ३ एनाजासु। कृगकृसनिदानया

२४

यकायजायल्लया। धियपूर्ययासीसर्नयाकसगिरुयधसनादनी॥ ॥ कवयः किंनपण्यनिकिंनरु
 दंकिवायसा। युदीमोकिंनकर्वनिकिंनउल्यमिमडाया॥ ॥ ८५ ॥ पहिगकविस्मयनकूमखनकाखनकूम
 नडा। मिसानकृकर्ममयाकधनका। नतकृधकमत्ताक॥ ॥ ८६ ॥ पूर्ययाउना। रार्थापूणा। पिधुपुयाः
 उना। ॥ ८७ ॥ हिमपुयाउनामिर्गसर्वमात्सपुयाउना॥ ॥ ८८ ॥ कायदयकसीमालधउानपिधुधयकन
 कायमालकायहिमयायनमिगमालधउानपुयाउयायनसमस्तमाल॥ ॥ समुदावनल। ॥ ८९ ॥ मि
 याकावावनल। गृहा। ननदावनल। दंशावनिगवनल। सीया॥ ॥ ९० ॥ समुदनडा। उधियाकोन
 ल। डा। उ। कृ। नाजातदं। डा। उ। सीरुलीध्वनिगनडा। उ॥ ॥ नगृहानि। वासाति। तयाकागाननः

समस्यायना

नयससय
मयससय

या उरुना दू गन नवायु उध धि ग्व म्नी जना धाय जना मरु जना धाय ॥ ॥ यस्य रार्थ स्वरूपा चरु र्क न म नू ण
मि नि ४ नि र्म म धू न रा वि च सा णि या न णि या णि या ॥ ८२ ॥ ग्व क्क या म्नी रि णं रू प पू नू ष या व च न स द् वि
क द्दि थ म धू न व च न रु द्धा क थ या म्नी णा धाय णा म रू णा धाय ॥ ॥ यस्य रार्थ गृ ह नि र्म ४ क णा
च य त्रि ण र्क न । न स्य सी द नि ष म्पा णी य द्दि नी व हि मा णा म ॥ ८३ ॥ ग्व क्क या म्नी न खि ज्ञा न उ षा थ
न वा य उ ल थ क्क या म्नी लि ल उ न्नि ड् ४ ख द्द या उ णा णि न ख द्द य ले थ द्द न यू उ ॥ ॥ यस्य गृ ह च
रार्थ च मा णे व हि न का नी ति । व द्द न न स्य म्पा णि णु क्क य द्द य थ णा णी ॥ ८४ ॥ ग्व क्क या म्नी न मा
म न या षा थ हि न या रू थ या णी लि ल व द्द मा न इ ले णु क्क य द्द या च द्द मा थ ॥ ॥ किं ज्ञा न ४ व द्द रि

पुनः ४१४ भक्तसंकायकावके ४ वलमवकलालमियरुविश्रमनकूलै ॥ ८३ ॥ गडाकपूजकायलपूनकूययाज
नभक्तसंकायविआहासीकनधननपूरुलहासीकूकनैगभक्तभक्तकाययाककूलयाविश्रमनउडाक ॥ ८४ ॥
॥ ८५ ॥ एकलार्थाय ४ पूजा ४ दहलिदगधनव ४ कन्या कालावधनपिननयास्यनिविक्रिया ॥ ८६ ॥ श्रीकृ
ष्णकायस्वधनगुठिह्वायदउसाजिक्क १० लिच्छाक्काचधनयाविकाललोयमरु ॥ ८७ ॥ ४
वहव ४ पूजा गयामकायदिपुजगु ॥ यऊनवाधमधननीलीवावृषमूत्तुऊन ॥ ८८ ॥ गलक्ककायदः
लक्ककायगयाउनीआरुलधननअस्वमधयरूयाकानित्रधसउकूललेय ॥ ८९ ॥ एकनधुक्क
कनदअमाननवदिनी ॥ दक १ ननधुनेसर्वकूपूणलकूलैयथा ॥ ९० ॥ कूकमा ४ गदगमानमी

ननयाउ। समस्तवनदकंदहलपू। कपूणलकूलमा। नकानथ। कुली॥ ॥ नकनापिसुवृक्षनपूषातनसु
 गन्धिना४ वाणी। नीतचनेसर्वसूयलकूलैयथा॥ ८२॥ ॥ कृमाणीमायावृहा। अनगमके। नयनगमनक
 लीसूयलकूलरिनकानथ। नाथ। कुली॥ ॥ ऊहापूजावगमहृत्वा४ रथी। च्छदानगमिनी। विरुवध
 पिसुवृ४ स्वर्णनस्यमहीनल॥ ८०॥ ॥ गमक्यामीपू। सवकथ। उवगमस। उवधननगमकक्यापृथि
 सेस्वर्णयाय॥ ॥ यपूरा। पिउर्वस्या४ सपितायमुयापिनी। नमिनेयउविठ्ठस४ सराया। ननिर्वृ २१
 नि४॥ ८१॥ ॥ गमन। गमनववृया। कुलीधपूण। गमक्या। ववूनधधयसविठ्ठसकुलीधमिनेधमीधपूत्रः
 षयावगमसकुलीधमीकुली॥ ॥ यस्यजीवनिजीवनि। विप्रमिउधवाधवा४। सरुलीजीविनीनस्यः

आत्माधकातजी। विम॥ ८२॥ ॥ गमक्या। लम्बादवानवाकृलोमववाधधक्यादायासरुलध
 य॥ ॥ सजीवनिगु। गमयस्यऊहाधर्मसजीवनिगुलधर्मविहीनस्यनिष्कूलैनस्यजीवनि॥ ८३
 ॥ गमक्यागुलधर्मसेविकनधक्याकधयगुलधर्मसदुक्क्यादायानिष्कूल॥ ॥ वाचासनस्तनी
 यस्यरायात्रूपवनिनमी। लक्ष्मीयागवनिनस्यसरुलीनस्यजीविनी॥ ८४॥ ॥ गमक्यावचनसे
 नसनी। चानस्त्रीरूपवनिनमीकुली। लक्ष्मीयागधला। उयाणीकुलीधयासादायासरुलध
 य॥ ॥ धर्मार्थकाममादृगंयमेकापिनविशुन। ऊजावातत्रविमापिनीनर्थनस्यजीवि
 ती॥ ८५॥ ॥ धर्मार्थकाममादृधपेनासक्तगादंमदयूउकुल। मजावातपिउकुलधमादा

यानि त्रय धर्मयः ॥ धर्मसत्यविहितस्य दिनयानि च विविदिताः । सलाह कालवर्जनस्यैव वक्ष्यतीत्य
 न ॥ २० ॥ धर्मसत्यमदुयादिनेरुयूः सुक्रियाने धरुयूः कर्मिया वेमुथं धरुयूः धमथं धः
 मीजीनत्रयैतावतां रुयू ॥ २१ ॥ धरुयूः पिगुधवाचा दाषावाचा गुत्रात्रपि । रुकिरुकी वचा धम
 नवाचा गुत्रुणोत्रवान् ॥ २२ ॥ धरुयूः रुलसने गुल्लायया रु मिगुयारुलसने दाषदायया २३
 ग्य रुकिरुवदाय रुनेमाल गुत्रुयामर्क अरुगुतिरुवदाय रुनेममगुल ॥ २४ ॥ अरुकरु
 यीनकरु वीया ॥ २५ ॥ क लुगामे तपी करु वीभवकरु वीया ॥ २६ ॥ क लुगामे तपी ॥ २७ ॥ मय
 दलयाय मगुल क लुगामे तपी तसने यादल रुकायाय माल क लुगामे तपी तसने ॥

॥ ॥ अरुकिरुवदाय रुनेमाल गुत्रुयामर्क अरुगुतिरुवदाय रुनेममगुल ॥ २४ ॥ अरुकरु
 यीनकरु वीया ॥ २५ ॥ क लुगामे तपी करु वीभवकरु वीया ॥ २६ ॥ क लुगामे तपी ॥ २७ ॥ मय
 दलयाय मगुल क लुगामे तपी तसने यादल रुकायाय माल क लुगामे तपी तसने ॥
 ॥ ॥ अरुकिरुवदाय रुनेमाल गुत्रुयामर्क अरुगुतिरुवदाय रुनेममगुल ॥ २४ ॥ अरुकरु
 यीनकरु वीया ॥ २५ ॥ क लुगामे तपी करु वीभवकरु वीया ॥ २६ ॥ क लुगामे तपी ॥ २७ ॥ मय
 दलयाय मगुल क लुगामे तपी तसने यादल रुकायाय माल क लुगामे तपी तसने ॥

हननं यथा ॥ ४ ॥ कालसूक्तं यथा ॥ कालाहि इति नमः ॥ २ ॥ कालनया वीथानयि ॥ कालनयजारी
 नयायुजा ॥ कालसदनं कालसजागलपिधानं धधिठ कालगुलियूनकमडिउ ॥ ॥ कालासुहोत्राहन
 रिंरुलकालासुवरुणकाल ॥ ४ ॥ यवरुणसुहृष्टिपूतकालापिरीहय ॥ ३ ॥ कालयाकनानयययः
 कालयाकनानयिसूय ॥ कालयाकनानसुहृष्टिपूतकालयाकनानसीहानरु ॥ ॥ तदिसीहमिना
 रथवचन्याकर्तनलमात्र ॥ ४ ॥ सर्वसीहनकालाहसारां कालामहाहरी ॥ ४ ॥ यकासदिवायुधिविल
 खवचसुमिरुसुधनसमरु कालनमाचकयुधनयाकनानकालअमिकु ॥ ॥ किंकनिष्पतिव
 काय ॥ ॥ कायनविद्यनानन ॥ ४ ॥ दयनकयामेनज किंकनिष्पति ॥ ५ ॥ दूयायद्वाहा ॥ ५ ॥

सु३

२२

नमः ॥ यथा ॥ कदमदलेगुलिककूयायघविलिजाह दयनगामसवरुमन्वालयनसिलिचिपकाय ॥ ॥
 कदलिवनमधु ॥ ५ ॥ वकिर्मन्यपनाकम ॥ अविदकजनकायुनवाकिंकनिष्पति ॥ ५ ॥ कदलिवनस
 नयानिवललाहकयमरुध्वविजानमइधयसगुणवनकसुखल ॥ ॥ ययलिन्नमर्थादालवकिं
 किलसागत्रसागयारुदमिहृनियलयपिनसाधव ॥ ॥ यलयकालससमूदनमवनययक ॥ ॥
 धूजनरुदययलयकालसीरिन्नमर्थादशयरु ॥ ॥ मनुष्यविमकल्याकमर्थादसागत्र ॥ ॥
 नि ॥ यनमसत्त्वानचत्रनिकदाचन ॥ ८ ॥ कल्यातससमूदनमवनययक ॥ ॥ मधनपूमहा
 मनुष्यादिहिंछितालमचननपू ॥ ५ ॥ लरुलसनी ॥ ॥ विश्वमसीचयलादियनवाक्का ॥ ५ ॥

वन्द्यमादिपूजयन्तः साधनानि कलसंयुतं ॥ २२ ॥ महादेवस्त्वैसत्तु पूजयन्तु कर्णनवम् (गणतचन्द्र
माष्टसत्तुहृयायेमान्तायादन्तु पूजयन्तु अपूतृषधीकाषयायहाधकाजलपाउ ॥ ॥ लेखक उमाध
क (विवेचयचन्द्रमासु विष्णुका ४ ॥ सर्वव्यासनिभामृता ४ क्रियावकव्यपेक्षिना ॥ २४ ॥ चौकक्रेयदलपूः
द्वज्जालुसयापनिधुसत्तुवा निदहा पूर्वक्रियाकर्मयाह्वयक्षिण ॥ ॥ वाहात्यामव्यवनिर्झनाउत्तवा न
वाधनी ॥ धानाव्यवनिर्झनीनिकामना ४ विवाहका ॥ २५ ॥ वाहातवनिर्झनाउत्तवा नयव्यवनिर्झ
न ॥ धानाव्यवनिर्झनीनिसनयाय ४ नयवनिर्झनीनिरुकाक्षीकायाय ॥ ॥ वृज्जुनाथीवाहीर्षविशार्थीचवद्वः
४ न ॥ वृज्जुकालमयर्थीमानार्थीनृपनिवृज्जु ॥ २६ ॥ धनार्थीनवतज्जवापालयाय ॥ विशार्थीनव

[illegible]

इति विदुः किरुका वृषपूयगा ॥ ३० ॥ मनपूरुवदकादिर्जनं धनिपनिनिर्हृतिदकं इत्यमचानस
 नैकयिउ साहसीवाहासीवाह ॥ ॥ मूर्खोपिपनिहर्हया पुत्यहादिपद ४ पधु ४ विद्यानवाक्यमल्यन
 सकेटकाय ॥ ३१ ॥ मूर्खजानिउ अकनानमाल पुत्यदहायमुपुमिहका निपवदनहाजनमनसस
 ममल्लुअथयथविय ॥ ॥ सूर्यकुने १ खलकुने ४ सूर्यकुनमल ४ खल ४ मसोपधिव ४ ४ सूर्य ४ खल
 ४ खल ४ मसोपधिव ४ ४ सूर्य ४ खल ४ खल ४ मसोपधिव ४ ४ सूर्य ४ खल ४ खल ४ मसोपधिव ४ ४ सूर्य ४ खल
 साहसुअपधिन सयअयूरुयायजिउ इर्जनजानिउपनिनेउयभमययमजिउ ॥ ॥ हसिहसुसहः
 पुनयमहसुनवाजिनभृगीनादवाहसुनदवाह्यागेनइर्जन ॥ ३३ ॥ किमिअदालिहृ १००० पाचक ४
 मदि १०० कपाचक ४ दउअमकयामजिहृ १० पाचक इर्जनकादवाह्यागेनरुउवातदय ॥ ॥

३५

इति ती इंसहसुनक लिहसुनवाजिनभृगीनादवाहसुनदवाह्यागेनइर्जन ॥ ३४ ॥ किमिअदालिहृ १००० पाचक ४
 मदि १०० कपाचक ४ दउअमकयामजिहृ १० पाचक इर्जनकादवाह्यागेनरुउवातदय ॥ ॥
 तिमनेमामसु ४ लेकमायदी ॥ तिमिनानेइर्जे ४ सु ४ किमिहोनरयकुन ॥ ३५ ॥ इर्जनइकात
 मसुअइर्जनखदावमयमाल ॥ ३६ ॥ पाकाययविअवेनखनयननगयात्रीवाह ४ मन्त्री ४ सुवेनकी
 नहीनादिमुवनविय ॥ ३७ ॥ १ ॥ मूपायदिसयनह्याह्यासाअकिअथघासनयानइइअइः
 सायाइइनयानविषइय ॥ तिमकनान ॥ ३८ ॥ मूपायदिसयनह्याह्यासाअकिअथघासनयानइइअइः

मायानिष्ठसर्वविजयतु ॥ १ ॥ विवाधदुःखालयं ज्ञात्वा लयमपि ॥ अलिङ्घनीकालवल्लरुर्ज
नकालवल्लसर्जुनलः वासरोसमि ॥ याधवल्लसंययययय ॥ ॥ अहिकेकलकदाकका
धर्पिगंल ॥ गनकानरकापचक्रुह्यातीनविद्युत ॥ ३ ॥ खयतांदासन ७० चालयाक नयना ८० क्षमन
सिगसिनायाक गत १०० क्षमन कानयाक खययाक धूमियाका १०५ ३५३ अकभूतमद्र ॥ ॥ ३ ॥
ह्यान ॥ द्वाचानमिहमहयनिलज्ज ॥ विधामसमयकार्यविनागमपमद्युगि ॥ ३ ॥ ह्यान
सकयति ॥ यात्रिग मिहकवस्रदे ॥ उतनाल ह्यानक्षलस विष्मसयातडा ॥ कार्कनाहउ
ययय ॥ ॥ मृदनेवमृदहकि ॥ इनाहकिदयती ॥ नाहाध्वंमृदनाकिश्चिरुखालीद्वानामृद

॥ १ ॥ नायूनचाकभाचकय नायूनचाकभाचकय साधलपमरिअ विकृतिमद्र धनेनचाकभाचिनी काक
नाय ॥ ॥ वनेसकलिनीवकि दहनूतानिनदमिरमलमूललगकि ॥ अयादा मृदमिती ॥ १ ॥ ॥ १ ॥
वासींयंयंयंयं हयामिन नलवासीभायू हयकल्यहयल रवावल्लकाका हाना ७० भाच मंयूनायू
नल ॥ ॥ सुतलाभावलिवईकीन्याचवद्रुसविणी ॥ पुयनाशीचक्रुह्यातीनविद्युत ॥ ३ ॥
सयूलाक धसा कीन्या गययनयाव धनयातायाचकी नालनमाल ॥ ॥ नहसूरदमेधून्यापवेदावा
नकिर्कनी कलहयकृमिस्त्रि वडनमीपत्रिवर्जय ॥ ३ ॥ ॥ गुफखविमउ मिगुनहाक मवयादाय नह
लायययमंय ॥ धनयोतोचकीभाउनमाल ॥ ॥ अययानेगयामरु ४ ताव रवेवयमिका

धमिचवेननकात्रयत् ॥ ७१ ॥ इह उ विष्णुसंभवा, च्छल विष्णुमनउ, थमकाधीरुयंमभउ, मिउओवेत्रियाय
 मनउ ॥ ॥ इनयंमलिनाजाने, विषयवृषलीपनी। पंजां। यावाकि नैवने जूरे, नसवकि सदा वृषा ॥ ७२ ॥
 कृतीगिनचत्रप्रनाज, वृषलिपनिवा कृलवुरुगंसीयासिथत। सवलमभउ। कृतीजउ ॥ ॥ कृमनीना
 सि विष्णुसंभवा यी कृतात्रनि ॥ कृनाकृनासिनिहृति, कृद (भ) नासिजीविनी ॥ ७३ ॥ कृमलियाकविष्णु
 समइ मरिग्वलीयाकत्रनमइ, कृनाकृसनिहृतिमइ कृद (भ) नायायमाइ ॥ ॥ नासिसहसदाचोन, ना (भ)
 च, वृषलीपनी। मअयोसूहनासिभूतकालगयंनहि ॥ ७४ ॥ खयाकसहसमइ, वृषलीपनिवा कृलयाः
 केनेचमइ, मनवाल्याकसूहममइ, रुआलयाकधसनाईमइ ॥ ॥ दोविषीविषमगि ॥ ७५ ॥

॥ ७६ ॥ निष्ठावाकृलयाऊकत्रन, वाकृनयाऊऊ
 मियाऊऊकत्रहमीपूषयाऊकत्रलगुनूयाऊगाययाऊकत्रन, महादवयाऊ, थसा, या दू
 कत्रनथनसऊकत्रलआनमभउ ॥ ॥ लंकयाऊहयलकीदाकि स्त्रयागभालना, पअययम
 विअन, नरू, याकृगसीगति ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ लाकयाऊऊ, हयविऊ, दकि स्त्रयागिमइ, थढागामइः
 यसनापलाकमभउ ॥ ॥ नाऊऊनीशुकृगीयानि, वेकल्यअवइगुनी, ननात्रिस्त्रिवृद्धिः
 सान्नसूरव ॥ ७९ ॥ ८० ॥ अऊलनीययमइ, विकलरावनवइ, ननऊऊमिसा, स्त्रि
 द्विमरुऊ, सूरवनसूरगहायमसउ ॥ ॥ अन (भ) धामि (भ) यम, यापि (भ) यम (भ) वच (भ) पूनव (भ) य

वर्ष १८८५ च २० वय कथा ॥ त गज २५ सा म ५ या म ८० क ना ठी ल न का न सिद्धि य स व न

~~विशेष विवरण~~

रम्य र ग व ज स य ४६ ति य

न २१ द य

न का न सा त स ग ५ ह र ति

आशु क कथा
2498
ASHU K KATHA